

पाठ 65

1. क्या यीशु दुनिया में आया था ताकि हम उसके लिए काम करें और स्वर्ग जाने के लिए अपना रास्ता अर्जित करें?

-नहीं।

2. यीशु ने क्या कहा कि वह संसार में करने के लिए आया है?

-लोगों की सेवा करना, और कई लोगों के लिए फिरौती के रूप में अपना जीवन देना।

3. कैसे बरतिमाई का अंधापन हमें सभी लोगों की याद दिलाता है?

-जिस तरह बरतिमाई अंधा था, उसी तरह सभी लोग अंधे पैदा होते हैं।

4. सभी लोग अंधे कैसे पैदा होते हैं?

-क्योंकि सभी लोग आदम और हव्वा से पैदा हुए हैं, सभी लोग परमेश्वर के सत्य के प्रति अंधे पैदा हुए हैं।

5. क्या बरतिमाई फिर से देखने में सक्षम होने के लिए खुद कुछ करने में सक्षम था?

-नहीं।

6. क्या लोग परमेश्वर के सत्यों को देखने में सक्षम होने के लिए स्वयं कुछ भी करने में सक्षम हैं?

-नहीं।

7. बरतिमाई को फिर से देखने में अकेले कौन मदद कर सका?

-यीशु।

8. अकेले सभी लोगों को फिर से देखने में मदद कौन कर सकता है?

-यीशु।

9. बरतिमाई ने यीशु को दाऊद का पुत्र क्यों कहा?

-क्योंकि यीशु राजा दाऊद का वंशज था जिसके बारे में परमेश्वर ने वादा किया था कि वह उद्धारकर्ता होगा।

10. लोगों ने बरतिमाई को क्यों डाँटा और चुप रहने को कहा?

-लोगों ने सोचा कि यीशु एक गरीब, अंधे भिखारी की मदद नहीं करना चाहेंगे।

11. क्या यीशु एक गरीब, अंधे भिखारी की मदद करना चाहता था?

-हां।

12. क्या परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम करता है, और सभी लोगों को बचाना चाहता है?

-हां।

13. क्या यीशु ने बरतिमाई को फिर से देखने में मदद की?

-हां।

14. क्या यीशु लोगों को रोमियों के शासन से छुड़ाने के लिए यरूशलेम गए थे?

-नहीं।

15. यीशु यरूशलेम क्यों गए?

-यीशु लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से छुड़ाने गए।

-क्योंकि यहूदी अगुवे यीशु से घृणा करते थे, वे उसे मारने का उपाय खोजते थे।

आइए पढ़ें मरकुस 14:1-2

1- फसह और अखमीरी रोटी के पर्व में केवल दो दिन शेष थे, और प्रधान याजक और व्यवस्था के शिक्षक यीशु को पकड़ने और मार डालने का कोई धूर्त उपाय ढूंढ रहे थे।

2- "लेकिन पर्व के दौरान नहीं," उन्होंने कहा, "या लोग दंगा कर सकते हैं।"

-यहूदी नेता फसह के पर्व के दौरान यीशु को गिरफ्तार क्यों नहीं करना चाहते थे?

-क्योंकि उन्हें डर था कि अगर उन्होंने फसह के पर्व के दौरान यीशु को गिरफ्तार कर लिया, तो लोग हिंसा का जवाब देंगे।

आइए पढ़ें मरकुस 14:10

10-तब यहूदा इस्करियोती, जो बारहों में से एक था, महायाजकों के पास यीशु को पकड़वाने के लिथे उनके पास गया।

-यहूदा कौन था?

-यहूदा उन बारह शिष्यों में से एक था जिन्हें यीशु ने चुना था।

-क्या यहूदा जानता था कि वह पाप में पैदा हुआ था, और उसे अपने उद्धारकर्ता के रूप में यीशु की आवश्यकता थी?

-नहीं।

-क्या यहूदा विश्वास करता था कि यीशु ही उद्धारकर्ता परमेश्वर था?

-नहीं।

-यहूदा ने यीशु का अनुसरण नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि यीशु ही उद्धारकर्ता था।

-फिर यहूदा ने यीशु का अनुसरण क्यों किया?

-यहूदा ने यीशु का अनुसरण किया क्योंकि वह बहुत अधिक धन प्राप्त करना चाहता था।

-जब यहूदा को यीशु से धन नहीं मिला, तो उसने यीशु को उसके शत्रुओं के हाथों धोखा देने का निश्चय किया।

-किसने यहूदा को यीशु को धोखा देने के लिए प्रेरित किया?

-शैतान।

-शैतान क्यों चाहता था कि यहूदा यीशु के साथ विश्वासघात करे?

-क्योंकि शैतान यीशु से नफरत करता है।

-शैतान यीशु से नफरत क्यों करता है?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

-क्योंकि यीशु सच बोलते हैं।

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें।

-शैतान क्यों चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें?

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु हमें न बचाए।

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु पाप और मृत्यु की शक्ति को नष्ट न करे।

-शैतान चाहता था कि यहूदी नेता यीशु को मार डालें ताकि यीशु शैतान की शक्ति को नष्ट न करे।

-इसलिए, यहूदा यीशु को धोखा देने के लिए यहूदी नेताओं के पास गया।

-भविष्यद्वक्ताओं ने किससे कहा कि उद्धारकर्ता को धोखा देगा?

-करीबी दोस्त।

-जिस तरह परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से वादा किया था, यीशु को एक करीबी दोस्त द्वारा धोखा दिया जाएगा।

-जब यहूदा यहूदी नेताओं के पास यीशु को धोखा देने के लिए आया, तो यहूदी नेताओं ने क्या सोचा?

आइए पढ़ें मरकुस 14:11

11-यह सुनकर महायाजक बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे धन देने का वचन दिया। इसलिए उसने उसे सौंपने का अवसर देखा।

-यहूदी नेताओं ने यीशु को धोखा देने के लिए यहूदा को चांदी के तीस सिक्के देने का वादा किया।

-यीशु को कितने के लिए धोखा दिया गया था?

-चांदी के तीस टुकड़े।

-जिस तरह परमेश्वर ने कई साल पहले भविष्यवक्ताओं के माध्यम से वादा किया था, यीशु को चांदी के तीस टुकड़ों में बेचा जाएगा।

-जब दावत का पहला दिन आया, तो चेलों ने यीशु से क्या पूछा?

आइए पढ़ें मरकुस 14:12

12-अखमीरी रोटी के पर्व के पहिले दिन, जब फसह के मेम्ने की बलि चढ़ाई गई, तब यीशु के चेलोंने उस से पूछा, कि तू कहां चाहता है, कि हम कहां जाएं, और तेरे लिथे फसह खाने की तैयारी करें?

-शिष्यों ने यीशु से पूछा कि उन्हें फसह का पर्व मनाने के लिए कहाँ तैयार होना है।

-फसह का पर्व क्या था?

-फसह का पर्व तब था जब यहूदियों को याद आया कि मिस्र में क्या हुआ था।

-मिस्र में क्या हुआ था?

-परमेश्वर ने उनके पहलौठे बच्चों को नहीं मारा, बल्कि उनके ऊपर से गुजरा क्योंकि उन्होंने एक मेमने की बलि दी और उनके घरों के दरवाजों को खून से रंग दिया।

-यहाँ यीशु ने अपने शिष्यों को क्या उत्तर दिया:

आइए पढ़ें मरकुस 14:13-15

13-तब यीशु ने अपने दो चेलों को यह कहकर भेजा, कि नगर में जा, और एक मनुष्य जल का घड़ा उठाए हुए तुझ से मिलेगा। उसका पीछा।

14-जिस घर में वह प्रवेश करे, उसके स्वामी से कहो, 'गुरु पूछता है: मेरा अतिथि कक्ष कहाँ है, जहाँ मैं अपने शिष्यों के साथ फसह खा सकता हूँ?'

15-वह आपको एक बड़ा ऊपरी कमरा, सुसज्जित और तैयार दिखाएगा। वहाँ हमारे लिए तैयारी करो।”

-यीशु ने कहा कि चले पानी का घड़ा लेकर एक आदमी से मिलेंगे, और वे उस आदमी का पीछा उस घर में करेंगे जिसमें वह प्रवेश करेगा।

-भले ही केवल महिलाएं ही पानी के घड़े ले जाती थीं, यीशु जानता था कि यह एक पुरुष होगा।

-यीशु सभी के बारे में सब कुछ जानता था।

-ऐसा कुछ भी नहीं था जिसे यीशु नहीं जानता।

-यह उस घर में होगा जिसमें वह व्यक्ति प्रवेश करता था जहाँ चेले फसह के पर्व की तैयारी करते थे।

-क्या आपको लगता है कि शिष्यों ने उस आदमी को पानी का घड़ा ले जाते हुए पाया?

आइए पढ़ें मरकुस 14:16

16-शिष्य चले गए, और नगर में गए और जैसा यीशु ने उन से कहा था, वैसा ही पाया। इसलिए उन्होंने फसह की तैयारी की।

-जब शिष्यों ने कमरा तैयार कर लिया और शाम हो गई, तो यीशु और उनके शिष्य घर चले गए।

आइए पढ़ें मरकुस 14:17-18

17-जब संध्या हुई तो यीशु बारहों के साथ पहुंचे।

18-जब वे खाने की मेज पर बैठे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि तुम में से जो मेरे साथ भोजन कर रहा है, वह मुझे पकड़वाएगा।

-जब यीशु और उसके चेले एक साथ भोजन कर रहे थे, यीशु ने क्या कहा?

-यीशु ने कहा कि उनका एक शिष्य उन्हें धोखा देगा।

-यीशु जानता था कि यहूदा उसके साथ विश्वासघात करेगा।

-यीशु को कैसे पता चला कि यहूदा उसके साथ विश्वासघात करेगा?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है और वह सब कुछ जानता है।

-ऐसा कुछ भी नहीं है जो यीशु नहीं जानता।

-यीशु ने चेलों से क्यों कहा कि उनमें से एक उसे पकड़वाएगा?

-यीशु चाहता था कि यहूदा इस बारे में सोचे कि वह क्या करने जा रहा है।

-यीशु चाहता था कि यहूदा पश्चाताप करे।

-यीशु चाहता था कि यहूदा अपना मन बदल ले, पैसे लौटा दे, और उसके साथ विश्वासघात न करे।

-फिर शिष्यों ने क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 14:19-20

19-चेले उदास हुए, और वे एक एक करके उस से कहने लगे, कि निश्चय में नहीं?

20-"यह बारह में से एक है," यीशु ने उत्तर दिया, "वह जो मेरे साथ कटोरे में रोटी डुबोता है।"

-चूंकि यीशु और चेले एक साथ भोजन कर रहे थे, यीशु ने कहा कि जो उसे पकड़वाएगा वह वह था जो यीशु के साथ कटोरे में अपनी रोटी डुबो रहा था।

-जब यहूदियों ने एक साथ खाया, तो उन्होंने रोटियों से रोटी के टुकड़े तोड़ दिए, और टुकड़ों को बीच में साँस के एक बड़े कटोरे में डुबो दिया।

-यीशु कह रहा था कि जो उसके साथ विश्वासघात करेगा, वह उसके साथ अपना भोजन बाँट रहा था।

-फिर से, यीशु चाहता था कि यहूदा इस बारे में सोचे कि वह क्या करने जा रहा है।

-क्या किसी के साथ खाना बांटना और फिर उनके साथ विश्वासघात करना बुराई है?

-हाँ, यह बहुत बुरा है।

-फिर यीशु ने क्या कहा?

आइए पढ़ें मरकुस 14:21

21-यीशु ने कहा, "मनुष्य का पुत्र जैसा उसके विषय में लिखा है, वैसा ही जाएगा। परन्तु उस मनुष्य पर हाथ जो मनुष्य के पुत्र को पकड़वाता है! उसका जन्म न होता तो उसके लिए अच्छा होता।"

-यीशु ने स्वयं को मनुष्य का पुत्र क्यों कहा?

-क्योंकि यीशु भी पूर्ण मनुष्य थे।

-क्योंकि यीशु एक पुत्र के रूप में मनुष्य की सेवा करने के लिए आया था।

-यीशु जानता था कि उसे मरना है।

-लेकिन भले ही यीशु को मरना पड़ा हो, जो व्यक्ति यीशु को पकड़वाएगा, उसे बहुत दंडित किया जाएगा।

-परमेश्वर ने यहूदा को यीशु को धोखा देने के लिए मजबूर नहीं किया।

-यहूदा को यीशु को धोखा देने के लिए हमेशा के लिए दंडित किया जाएगा।

-जैसे ही वे खा रहे थे, यीशु ने एक बार फिर चेलों से बात की।

आइए पढ़ें मरकुस 14:22

22-जब वे खा ही रहे थे, तब यीशु ने रोटी ली, धन्यवाद करके तोड़ी, और अपने चेलोंको यह कहकर दी, कि लो; यह मेरा शरीर है।"

-यीशु ने कुछ रोटी ली, पिता परमेश्वर को धन्यवाद दिया, रोटी को टुकड़ों में तोड़ दिया, और अपने शिष्यों को टुकड़े दे दिए।

-यीशु ने कहा कि रोटी उनके शरीर की निशानी थी।

-कैसे रोटी यीशु के शरीर की निशानी थी?

-जिस तरह रोटी तोड़ी गई, उसी तरह यीशु का शरीर भी दुष्ट लोगों द्वारा तोड़ा जाएगा।

आइए पढ़ें मरकुस 14:23-24

23-तब यीशु ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और उन्हें चढ़ाया, और सब ने उसमें से पिया।

24-“यह वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के लिये बहाया जाता है,” उस ने उन से कहा।

-फिर, यीशु ने शराब का प्याला लिया, धन्यवाद दिया और अपने शिष्यों को दिया।

-यीशु ने कहा कि शराब उनके खून की निशानी थी

-कैसे शराब यीशु के खून की निशानी थी?

-जैसे शराब पीने के लिए उँडेली जाती थी, वैसे ही यीशु का लहू भी बहाया जाता था।

-यीशु ने किसके लिए कहा कि उसका लहू बहाया जाएगा?

-यीशु ने कहा कि उनका लहू बहुत से लोगों के लिए बहाया जाएगा।

-जब वे खाना खा चुके, तो यीशु ने एक बार फिर चेलों से बात की।

आइए पढ़ें मरकुस 14:25-26

25-यीशु ने कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि जब तक परमेश्वर के राज्य में नया न पीऊँ, तब तक मैं दाख का फल फिर कभी न पीऊंगा।

26-जब वे भजन गा चुके थे, तब वे जैतून के पहाड़ पर गए।

-शाम का समय था जब यीशु और उनके शिष्यों ने अपना भोजन समाप्त किया।

-जब वे भोजन कर चुके, तब यीशु और उसके चले यरूशलेम से निकलकर
जैतून के पहाड़ पर चले गए।